

सम्पादकीय

सीरिया में तथ्यापलट से भंवर में देश का भविष्य

अफगानिस्तान, प्यामार, श्रीलंका, बांग्लादेश के बाद अब सीरिया में तथ्यापलट हुई है। इसमें से अफगानिस्तान, बांग्लादेश और सीरिया में सुनी विद्रोहियों ने सत्ता पर कब्जा किया है। सीरिया में राष्ट्रपति बशर-अल असद की सरकार गिर गई है, इसी के साथ असद परेवार के 50 वर्ष के शासन का अंत हो गया है, बसर के देश छोड़कर भासने का दावा किया जा रहा है। सुनी विद्रोहियों ने शिया असद के शासन को उत्थापित किया है। सत्ता पर इस तरह कब्जे का ट्रैड खतरनाक है। लाता है संकृत राष्ट्र एवं दम निष्ठभावी है, वैश्वक व्यवस्था का नानून को कोई बदलाव नहीं रख गया है। अबर बिंग के दौरान कई राजशाही व सैन्यासकों के अंत के बाद पश्चिम एशिया में लगा था कि लोकतंत्र का उत्तर हो रहा है, लेकिन दुर्दशा से ऐसा नहीं हुआ, कमज़ोर सरकार के द्वारा मैं स्थानिक चर्चणपंथी गुट मजबूत होते गए। इस्लामिक स्टेट की वजह से सीरिया पहले से ही काफ़ी खराब स्थिति में है। अर्थव्यवस्था चारसर्वाई हुई है। गतवार तेज है, लोग यूरोप में पनाल लेने लगे हैं। राष्ट्रपति अल असद रूस के सहयोग से जैसे-जैसे सरकार चला रहे थे। कच्च तेल समेत प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जे के परिचमी खेल में खाड़ी व परिचम एशिया के देशों की हालत पतली होती है और ज़रूरत का मजबूत होता गया है। अफगानिस्तान, बांग्लादेश और सीरिया को देखें तो तीनों मुस्लिम बहुत देश हैं और तीनों ही जगम सत्तावर्तन हिस्सा के साथ हैं, एक स्थापित सरकार को सत्ता से रखना गहरा। इस क्षेत्र में एक परिवार के दशाओं के तक सत्ता में रहने के चलते भी विद्रोह की जीमीन तैयार हुई प्रतीत होती है। लेकिन इसका तरीका हिंसक नहीं हो सकता है। सिस्टम में बदलाव सिस्टम से ही होना चाहिए। इस तरह के सत्ता परिवर्तन में वैश्वक संसाधनों, महाशिवरायों और विश्व बिरादरी की चुप्पी वैश्वक शांति की बात करने वाले पर सवाल खड़ा करती है, चीन अपनी सामरिक ताकतों का प्रदर्शन कर लगातार ताइवान को डाराने का प्रयास कर रहा है। यूक्रेन के साथ रूस की जग तीन साल से चल रही है, इजराइल आंकिकी गुटों-हमास, हिज़ुल्ला, हूती के साथ इनके अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। ऐसे में सवाल है विश्व अमरिका की ओर बढ़ रहा है या मध्यस्थित दोर की ओर रहा है? संकेत अच्छा नहीं है। वैश्वक शांति बनाए रखने की जिमीदारी संयुक्त राष्ट्र और महाशिवरायों की होनी चाहिए। इसे किसी देश का घरेलू संकट मानकर अनदेखा नहीं किया जा सकता है। विश्व में अगर इस तरह से सत्ता परिवर्तन होगा तो कायदे कानून का क्या महत्व रह जाएगा? 'ऑपरेशंस रूस रूप टू कॉर्नर दिमिश' ने सभी विक्षिकी लड़ाकों और नागरिकों से 'खेत्रं सिरियाई देश' की सरकारी संस्थाओं को संक्षिप्त रखने का आहारन किया है। सीरिया के प्रधानमंत्री मोहम्मद गाजी जलाली ने एक वीडियो बयान जारी करके कहा कि बाद शासन की बागद शांतिपूर्ण तरीके से विश्व को सौंधते होंगे और स्थापित अब अमरिका के एक वरिष्ठ राजनीतिक ने भी बरीरन में एक प्रकारों द्वारा पूछे होंगे तो असद के डिकेने के बारे में टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। 2018 के बाद फहली बार है जब विद्रोही राष्ट्रिक के भीतर पहुंच गए। असद 2000 में किसके फेरे से सत्ता में आए थे सीरिया के लिए सवूयता राष्ट्र के विशेष दूर गीर पेंडसन ने सीरिया में 'व्यवस्थित ढंग से रेजनरिक बलाव' सुनिश्चित करने के लिए जिनवा में तकाल वार्ता का आहारन किया है। अमेरिका सीरियाई गृहयुद्ध के बीच सैन्य हस्तक्षेप नहीं करेगा। आज सीरिया का भविष्य भंवर में आ गया है।

मुद्दा

डॉ. चन्द्र त्रिखा

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले के बहाने इकबाल व रामतीर्थ द्वे

हमले होते रहे भारत के मुस्लिम-नेताओं ने बांग्लादेश के विद्रुद्ध आवाज उठारी होती। सौहार्द की बहाली का यह असर हो सकता था, मगर और वैष्णवी साहब या उनके सहयोगियों की इसमें कोई दिलचस्पी नहीं होती। वैसे अतीत के कुछ किसिसे ऐसी किसी पहलकमी का आधार बन सकते थे। थोड़ा पीछे लौटे तो उर्दू के प्रखात शायर एवं मुस्लिम विद्वान डॉ. इकबाल और स्वामी रामतीर्थ की दोस्ती के संदर्भ याद कर लेने चाहिए। अजब संयोग था कि दोनों की जन्मान्तिथ वर्ष एक ही था, सिर्फ 8 माह का अंतर था। इकबाल का जन्म 22 फरवरी, 1873 था, जबकि स्वामी रामतीर्थ 22 अक्टूबर, 1873 को जन्मे। दोनों का जन्म स्थान दोनों का क्षेत्र था। इकबाल सियाल कोटे में जन्मे थे, जबकि रामतीर्थ का गांव गुजराती मूलीवाला नाम से था। दोनों पंजाबी थे और दोनों का मूल ब्रह्मण वंश था। इकबाल के पूर्णज्ञ स्पृह ब्रह्मण थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ तो थे ही गोत्यामी ब्राह्मण। दोनों की पारिवारिक पृष्ठभूमि, धार्मिक थी।

इकबाल के पिता शेख नूर मुहम्मद एक प्रतिष्ठित मुस्लिम दर्जा थे और इस्लाम में गहरी आस्था रखते थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ के पिता गोसामी हीनराव, एक पुजारी थे और हिन्दुओं में प्रतिष्ठित धर्म-प्रचारक भानुराव जाते थे। स्वामी रामतीर्थ की दोस्ती के संदर्भ याद कर लेने चाहिए। अजब संयोग था कि दोनों की जन्मान्तिथ वर्ष एक ही था, सिर्फ 8 माह का अंतर था। इकबाल का जन्म 22 फरवरी, 1873 को जन्मे। दोनों का जन्म स्थान दोनों का क्षेत्र था। इकबाल सियाल कोटे में जन्मे थे, जबकि रामतीर्थ का गांव गुजराती मूलीवाला नाम से था। दोनों पंजाबी थे और दोनों का मूल ब्रह्मण वंश था। इकबाल के पूर्णज्ञ स्पृह ब्रह्मण थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ तो थे ही गोत्यामी ब्राह्मण। दोनों की पारिवारिक पृष्ठभूमि, धार्मिक थी।

इकबाल के शिक्षकों की देख रेख में हुई थी। इकबाल के शिक्षक थे मौलीवी मीर हसन सियालकोटी, जबकि स्वामी रामतीर्थ को भी गांव के मौलीवी मोहम्मद अली ने आर्थिक शिक्षा दी थी। रामतीर्थ ने प्राइवी शिक्षा के बाद अपने पिता को विश्व कर दिया था कि दोनों की जन्मान्तिथ के संदर्भ याद कर लेने चाहिए। अजब संयोग था कि दोनों की जन्मान्तिथ वर्ष एक ही था, सिर्फ 8 माह का अंतर था। इकबाल को जन्म 22 फरवरी, 1873 को जन्मे। दोनों का जन्म स्थान दोनों का क्षेत्र था। इकबाल सियाल कोटे में जन्मे थे, जबकि रामतीर्थ का गांव गुजराती मूलीवाला नाम से था। दोनों पंजाबी थे और दोनों का मूल ब्रह्मण वंश था। इकबाल के पूर्णज्ञ स्पृह ब्रह्मण थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ तो थे ही गोत्यामी ब्राह्मण। दोनों की पारिवारिक पृष्ठभूमि, धार्मिक थी।

इकबाल के शिक्षकों की देख रेख में हुई थी। इकबाल के शिक्षक थे मौलीवी मीर हसन सियालकोटी, जबकि स्वामी रामतीर्थ के बाद अपने पिता को विश्व कर दिया था कि दोनों की जन्मान्तिथ के संदर्भ याद कर लेने चाहिए। अजब संयोग था कि दोनों की जन्मान्तिथ वर्ष एक ही था, सिर्फ 8 माह का अंतर था। इकबाल को जन्म 22 फरवरी, 1873 को जन्मे। दोनों का जन्म स्थान दोनों का क्षेत्र था। इकबाल सियाल कोटे में जन्मे थे, जबकि रामतीर्थ का गांव गुजराती मूलीवाला नाम से था। दोनों पंजाबी थे और दोनों का मूल ब्रह्मण वंश था। इकबाल के पूर्णज्ञ स्पृह ब्रह्मण थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ तो थे ही गोत्यामी ब्राह्मण। दोनों की पारिवारिक सम्पर्क में 1895 में ही आए थे, लेकिन दोनों ने लालौर में उच्चशिक्षा भी पढ़ाई थी। इकबाल के शिक्षक थे मौलीवी मीर हसन सियालकोटी, जबकि स्वामी रामतीर्थ के बाद अपने पिता को विश्व कर दिया था कि दोनों की जन्मान्तिथ वर्ष एक ही था। दोनों पंजाबी थे और दोनों का मूल ब्रह्मण वंश था। इकबाल के पूर्णज्ञ स्पृह ब्रह्मण थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ तो थे ही गोत्यामी ब्राह्मण। दोनों की पारिवारिक सम्पर्क में 1895 में ही आए थे, लेकिन दोनों ने लालौर में उच्चशिक्षा भी पढ़ाई थी। इकबाल के शिक्षक थे मौलीवी मीर हसन सियालकोटी, जबकि स्वामी रामतीर्थ के बाद अपने पिता को विश्व कर दिया था कि दोनों की जन्मान्तिथ वर्ष एक ही था। दोनों पंजाबी थे और दोनों का मूल ब्रह्मण वंश था। इकबाल के पूर्णज्ञ स्पृह ब्रह्मण थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ तो थे ही गोत्यामी ब्राह्मण। दोनों की पारिवारिक सम्पर्क में 1895 में ही आए थे, लेकिन दोनों ने लालौर में उच्चशिक्षा भी पढ़ाई थी। इकबाल के शिक्षक थे मौलीवी मीर हसन सियालकोटी, जबकि स्वामी रामतीर्थ के बाद अपने पिता को विश्व कर दिया था कि दोनों की जन्मान्तिथ वर्ष एक ही था। दोनों पंजाबी थे और दोनों का मूल ब्रह्मण वंश था। इकबाल के पूर्णज्ञ स्पृह ब्रह्मण थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ तो थे ही गोत्यामी ब्राह्मण। दोनों की पारिवारिक सम्पर्क में 1895 में ही आए थे, लेकिन दोनों ने लालौर में उच्चशिक्षा भी पढ़ाई थी। इकबाल के शिक्षक थे मौलीवी मीर हसन सियालकोटी, जबकि स्वामी रामतीर्थ के बाद अपने पिता को विश्व कर दिया था कि दोनों की जन्मान्तिथ वर्ष एक ही था। दोनों पंजाबी थे और दोनों का मूल ब्रह्मण वंश था। इकबाल के पूर्णज्ञ स्पृह ब्रह्मण थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ तो थे ही गोत्यामी ब्राह्मण। दोनों की पारिवारिक सम्पर्क में 1895 में ही आए थे, लेकिन दोनों ने लालौर में उच्चशिक्षा भी पढ़ाई थी। इकबाल के शिक्षक थे मौलीवी मीर हसन सियालकोटी, जबकि स्वामी रामतीर्थ के बाद अपने पिता को विश्व कर दिया था कि दोनों की जन्मान्तिथ वर्ष एक ही था। दोनों पंजाबी थे और दोनों का मूल ब्रह्मण वंश था। इकबाल के पूर्णज्ञ स्पृह ब्रह्मण थे, जबकि स्वामी रामतीर्थ तो थे ही गोत्यामी ब्राह्मण। दोनों की पारिवारिक सम्पर्क में 1895 में ही आए थे, लेकिन दोनों ने लालौर में उच्चशिक्षा भी पढ़ाई थी। इकबाल के शिक्षक थे मौलीवी मीर हसन सियालकोटी, जबकि स्वामी रामतीर्थ के बाद अपने पिता को

